International Journal of Engineering Research & Management Technology
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 11, Issue-4 July-August- 2024 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

मध्यकाल में सांस्कृतिक समन्वय का साहित्य पर प्रभाव

डॉ० सुमन शर्मा
सहायक आचार्य (इतिहास)
विद्या संबल योजना
राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन,
जिला–भरतपुर (राजस्थान)

प्राचीन काल में विदेशी आक्रमणकारी हिन्द यूनानी, शक, हूण, पह्लव कुषाण भारत आये और अल्प अवधि के लिए शासन कर विलुप्त हो गए। कालान्तर में अरबों, तुर्कों, अफगानों और मुगलों के रूप में मुसलमानों ने पृथक धर्म, संस्कृति और मान्यताओं के साथ भारत में प्रवेश किया। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव का कथन है कि भारत विजय के पश्चात् अरब और तुर्क इस देश में बस गये और हिन्दूओं के सम्पर्क में आये, स्वाभाविक था कि हिन्दू समाज और संस्कृति पर उनका प्रभाव पड़ता और वे हिन्दू समाज और संस्कृति से प्रभावित होते।[1]

न केवल हिन्दू धर्म, हिन्दू कला, हिन्दू साहित्य तथा हिन्दू विज्ञान ने मुस्लिम तत्त्वों को अवशोषित किया, बल्कि हिन्दू संस्कृति की भावना और हिन्दू मन मस्तिष्क को परिवर्तित किया परिणामस्वरूप हिन्दू सभ्यता के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को नष्ट करने लगे। दोनों सभ्यताओं के सम्मिश्रण से नई संस्कृति का विकास हुआ न तो वह पूरी तरह से हिन्दू थी और न ही विशुद्ध रूप से मुस्लिम। इसे हिन्दू–मुस्लिम सभ्यता कहा जा सकता है।[2]

इस्लाम के प्रभाव के कारण दोनों धर्मों की संस्कृतियों में एक दूसरे पर छाप छोड़ी। हिन्दू मुस्लिम सभ्यता का असर सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं कला क्षेत्र में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

साहित्यिक प्रभाव–

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना से पूर्व देवनागरी लिपि भी हिन्दी व संस्कृत भाषा का विकास हो चुका था। हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से ही संस्कृत व हिन्दी भाषा में साहित्य लिखे जाते थे। भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना से भारतीय साहित्य प्रभावित हुआ और साहित्य में हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त उर्दू व फारसी भाषा का प्रचलन बढ़ गया।

हिन्दी साहित्य पर प्रभाव

भारत में हिन्दी का साहित्यिक विकास मुस्लिम आगमन से पूर्व हो चुका था। महत्त्वपूर्णकृतियों में चन्दबरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो तथा नरपति नाल्ह कवि द्वारा रचित बीसल– देव–रासो प्राचीनतम ग्रन्थ है।[3] इनके अतिरिक्त भट्ट केदार ने 'जयचन्द प्रकाश', कवि मधुकर ने मयंक जस चन्द्रिका तथा जगनिक ने 'आल्हा खण्ड' तथा कुछ अन्य ग्रन्थों की रचना की। इन ग्रन्थों की भाषा पश्चिमी हिन्दी थी क्योंकि साहित्यिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र राजस्थान था।[4] राजस्थान के राजपूत राजाओं की वीरता का बखान भाट–चारण द्वारा गीतों के माध्यम से किया जाता था।

सल्तनतकाल में हिन्दी साहित्य का विकास प्रारम्भ तो हुआ लेकिन यह उस समय की साहित्यिक भाषा नहीं बन पायी और सुल्तानों का भी इसकी ओर झुकाव धीरे–धीरे बढ़ने लगा। अल्लाउद्दीन ख़िलजी ने खुसरो से 'खालिक बारी' नामक पुस्तक तैयार कराई जिसमें हिन्दी शब्दों के अरबी–फारसी तदर्थों शब्द संकलित किये गये थे।[5] कुछ मुस्लिम साहित्यकार अपनी कृतियों में हिन्दी तथा संस्कृत का खुलकर प्रयोग करते थे। शनैः शनैः फारसी शब्दों का चलन होने लगा और फारसी शब्दों को हिन्दू कवियों की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी में भी स्थान मिलने लगा।

विदेशियों के भारत में बसने के बाद उनके वंशज स्वयं को भारतीय कहने लगे, उनमें से एक नाम अमीर खुसरो का उल्लेखनीय है जो स्वयं को हिन्दुस्तानी तोता अथवा हिन्दुस्तानी तुर्क कहा करते थे।[6] सर्वप्रथम खुसरो ने अपनी फारसी रचनाओं में भारतीय मुहावरों तथा प्रचलित शब्दों का प्रयोग कर उन्हें भारतीय परिवेश में ढालने का प्रयास किया। साहित्य के गद्य एवं पद्य रूपों की रचनाऐं की।[7]

खुसरो ने हिन्दवी भाषा में साहित्य रचना की, इन रचनाओं की भाषा खड़ी बोली व ब्रज थी। खड़ी बोली का प्रयोग पहेलियों, मुकरियों तथा दो सुखनों में किया है।[8] उदाहरणार्थ–

पहेली– एक थाल मोती से भरा सबके सिर पर औधा धरा।
चारों ओर थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

दोहा– बहुत कठिन है डगर पनघट की। कैसे भर लाऊँ मधवा से मटकी।।

खुसरो की हिन्दी कविताओं का उल्लेख 1606 ई. में जहाँगीर के दरबार में भी अरफात–उल–अशिकीन के लेखक तकी ओहादी द्वारा किया गया।[9] अमीर खुसरो ने अपने आध्यात्मिक गुरू शेख निजामुद्दीन औलिया के निधन पर निम्नलिखित हिन्दी का पद पढ़ा था।

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डाले केश।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देश।।[10]

तुगलक काल में हिन्दी की पहली मनसबी लिखी गयी थी।[11] अमीर खुसरो के पश्चात् ख्वाजा गेसूदराज़[12] तथा अन्य सूफियों ने हिन्दी भाषा का प्रयोग कर अपने उपदेशों को लोकप्रिय बनाया। कबीर, नानक, रैदास, दादूदयाल, मलूकदास, चण्डीदास, विद्यापति, ज्ञानेश्वर, नामदेव आदि ने अपनी कृति द्वारा स्थानीय साहित्य को वैभवशाली बनाया तथा सूफियों में कुतुबन ने मृगावती, मंझन ने मधुमालती, जायसी ने पद्मावत, आखिरी कलाम, अखरावट तथा जहाँगीर के समकालीन चिश्ती संत उस्मान ने चित्रावली नाम काव्यों के माध्यम से हिन्दी साहित्य का विकास किया।[13]

कालान्तर में अकबर का शासनकाल हिन्दी साहित्य के लिए स्वर्ण युग था। इस अवधि में तुलसीदास, सूरदास, अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना, रसखान और बीरबल हिन्दी के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि रहे। तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं में रामचरित मानस तथा विनय पत्रिका थी। तुलसीदास अकबर के समकालीन थे किन्तु उसके दरबार से सम्बन्धित नहीं थे। कवि सूरदास ने तुलसीदास से भी अधिक रचनाऐं की। वे अकबर के दरबार से सम्बन्ध रखते थे और उन्हें 'आगरे के अन्ध भाट' कहा जाता था।[14] मुस्लिम लेखक अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना अरबी, फारसी, तुर्की, हिन्दी तथा राजस्थानी के श्रेष्ठ कवि थे। द्वितीय मुस्लिम हिन्दी कवि रसखान थे, जिन्होंने कृष्ण–लीला के पदों की रचना की। अकबर के दरबारी बीरबल, मानसिंह टोडरमल आदि ने भी हिन्दी कवियों को संरक्षण दिया।[15] जहाँगीर ने जद्रुप गोसाई, राममनोहरलाल, किशनदास, वृक्षराज, केशवदास जैसे हिन्दी विद्वानों को आश्रय दिया। जहाँगीर का भाई दानियाल हिन्दी का अच्छा कवि था।[16] शाहजहाँ के शासन काल में हिन्दी साहित्य का अधिक विकास हुआ। शाहजहाँ दरबार में सुन्दरदास, चिन्तामणि, मतिराम बिहारी, कवीन्द्र आचार्य, हरिनाथ, शिरोमणि मिश्र, वेदांगराय, प्रमुख कवि थे। कवीन्द्र आचार्य ने शाहजहाँ की प्रशंसा में अवधि और ब्रजभाषा में एक मिश्रित काव्य कवीन्द्र कल्पतरू की रचना की। बिहारी के आश्रयदाता मिर्जाराजा जयसिंह थे। बिहारी 'माथुर चौबे' कहे जाते है।[17] औरंगजेब का हिन्दी के प्रति व्यवहार अच्छा नहीं था। भूषण, वृन्द कवियों को हिन्दू राजाओं ने दरबार में आश्रय प्रदान किया।[18]

संस्कृत साहित्य

भारत में मुस्लिम आगमन से हिन्दी व संस्कृत साहित्य पर सर्वप्रथम असर दिखाई दिया। फारसी के विद्वान अलबरूनी संस्कृत भाषा का ज्ञाता था, उसने अनेक संस्कृत ग्रन्थों का फारसी अनुवाद किया।[19]

सल्तनतकाल में दिल्ली सुल्तानों ने संस्कृत साहित्य को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया और न किसी संस्कृत विद्वान कवि को आश्रय दिया। दक्षिण भारतीय साहित्य का सम्बन्ध संस्कृत भाषा से है। अकबर प्रथम मुगल शासक था जिसने संस्कृत विद्वानों की रचनाओं का सुनता था तथा सिद्धान्तों पर विचार विमर्श करता था। उसके शासनकाल में फारसी प्रकाश, नाम फारसी–संस्कृत शब्द–कोष संकलित हुआ। दरभंगा के महेश ठाकुर ने संस्कृत में अकबर के शासनकाल का इतिहास लिखा। अनेक जैन विद्वानों को भी अकबर का संरक्षण प्राप्त था। जहाँगीर व शाहजहाँ ने अपने पूर्वजों की नीति का अनुसरण कर संस्कृत विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। शाहजहाँ के दरबार में संस्कृत विद्वान पण्डित जगन्नाथ राजकवि तथा कवीन्द्र सरस्वती मौजूद थे। औरंगजेब के शासनकाल में संस्कृत विद्वानों का सम्मान खतरे में हो गया।[20]

उर्दू साहित्य

उर्दू को बोलचाल की भाषा में 'छावनियों और बाजारों की भाषा'' के नाम से जानने लगे।[21] उर्दू का प्रारम्भिक नाम जवान–ए–हिन्दवी था।[22] उर्दू के प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों में विभिन्न अवधारणाऐं है। मोहम्मद हुसैन आजाद उर्दू की उत्पत्ति का मूल स्रोत ब्रज भाषा को मानते है। डॉ० महमूद शेरानी के अनुसार पंजाबी भाषा का विशेष योगदान है। डॉ० मसूद हुसैन के अनुसार उर्दू भाषा की उत्पत्ति फारसी एवं हरियाणवी के संयोग से हुई।[23] इतिहासकार युसूफ हुसैन भी इसी मत का समर्थन करते है।[24] कालान्तर में उर्दू एक स्वतन्त्र भाषा बन गई। अमीर खुसरो ने इसे 'देहलवी' कहा।[25] उर्दू ख्याति प्राप्त कवि मीर मोहम्मद तकी मीर ने 'निकातुश शोअरा' में लिखा है कि उनके समय तक खुसरो की हिन्दवी की रचनायें दिल्ली प्रख्यात थी।[26]

तुजुक–ए–बाबरी में बाबर ने हिन्दवी के शब्द हाथी, पान, गिलहरी, दोपहर आदि का प्रयोग किया। अकबर काल में हिन्दी को 'रेखता' के नाम से जाना जाता था। इसी काल में 'रेखता' की लोकप्रियता बढ़ने लगी और औरंगजेब काल तक पूर्ण रूप से विकसित हो गई। शाहजहाँ के शासनकाल में रेखता को उर्दू भी कहा जाने लगा और उर्दू शायरी की परम्परा भी बढ़ने लगी। प० चन्द्रभान ब्राह्मण उर्दू शायरी के बेहद

शौकीन थे।[27] प्रसिद्ध कवि वली दकनी (दक्षिणी) को आधुनिक उर्दू शायरी के जन्मदाता कहा जाता है। वली का पूरा नाम शम्सुद्दीन तथा वली इनका 'तखल्लुस' (कविता में उपनाम) था।[28]

फारसी साहित्य

मध्यकाल में सर्वाधिक साहित्य फारसी भाषा में लिखे गए। सर्वप्रथम भारत में लाहौर फारसी साहित्य के विकास को केन्द्र रहा। लाहौर में फारसी का सर्वप्रथम कवि अब्दुल्ला रूज्बेह था।[29] दिल्ली के सुल्तानों ने फारसी को अपनी राज भाषा बनाया।

दिल्ली तथा उसके निकट प्रदेशों में भी फारसी का प्रचार बढ़ने लगा।[30] इल्तुतमिश के दरबार में प्रसिद्ध फारसी कवि व लेखक अबू नसर, अबूवक्र बिन मुहम्मद रूहानी, ताज–उद्–दीन दबीर और नूरूद्दीन मुहम्मद अवफी प्रमुख थे। इल्तुतमिश की मुत्यु के पश्चात् दिल्ली सल्तनत की राजनीति में उथल–पुथल के कारण अशांति व्याप्त हो गयी थी। सुल्तान नासिरूद्दीन महमूदशाह स्वयं साहित्य प्रेमी था। फख़रूद्दीन नुनाकी तथा मिन्हाज–उस–सिराज इसी काल के फारसी विद्वान थे। मिन्हाज–उस–सिराज ने तबकात–ए–नासिरी में दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भ से 1260 ई० तक का इतिहास लिखा है। वह इल्तुतमिश के काल से ही शाही सेवा में था।[31] बलबन ने फारसी के श्रेष्ठ कवि अमीर खुसरो ओर मीर हसन देहलवी को प्रश्रय दिया। अमीर खुसरो फारसी का सर्वश्रेष्ठ भारतीय कवि था। निजामुद्दीन औलिया का शिष्य अमीर खुसरो ने कविता कथा, कहानी मसनवी और इतिहास के अनेक ग्रन्थ लिखे। महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में नूह सिपेहर, आशिका, किरान–उस–सादैन, एजाज–ए–खुसरवी, गर्रतुल कमाल, खमसा, पंजगंज, मतला–उल–अनवर, शीरी व फरहाद, लैला व मजनूँ, हश्त–बिहिश्त, देवलरानी खिज्रखाँ, नाज–उल–फुतूह, आइन–ए–सिकन्दरी, तुगलकनामा, मिफ्ता–उल–फुतूह, अफजल–उल–फ़वायद, तारीख–ए–दिल्ली खजाइन–उल–फुतूह, रसैल इजाज आदि है।[32] मीर हसन को 'हिन्दूस्तान का सादी' कहा जाता था। इन्होंने फारसी में प्रवाहपूर्ण गज़लों की रचना की तथा अपने गुरू निजामुद्दीन औलिया के वार्तालापों की फ़वायद–उल–फवाद नामक ग्रन्थ में उल्लिखित किया।[33] तारीख–ए–फिरोजशाही तथा फतवा–ए–इलाही, मासिर–ए–सआदत, हसरतनामा, कुव्वत–उल–तारीख़, सलत–ए–कबीर ग्रन्थों की रचना की। बरनी के अतिरिक्त मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में बद्र–ए–चाच तथा इसामी प्रमुख कवि थे। जिन्होंने दीवान–ए–चाच, शाहनामा तथा फुतूह–उस–सलातीन की रचना की।[34] फिरोजशाह तुगलक ने फुतूहात–ए–फिरोजशाही तथा शम्स–ए–सिराज़ अफीक ने तारीख–ए– फिरोजशाही फारसी ग्रन्थों की रचना की। याहया–बिन–अहमद सरहिन्दी का

तारीख–ए–मुबारकशाही तथा सिकन्दर लोदी की गुलरूख कविता का उल्लेख मिलता है।[35] इनके अतिरिक्त सल्तनतकाल में दिल्ली के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में फारसी भाषा का प्रचलन बढ़ गया तथा फारसी ग्रन्थों की रचना की गई।

फारसी ग्रन्थों की रचनाओं के अतिरिक्त औषधि शास्त्र, ज्योतिष, संगीत आदि ग्रन्थों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद भी किया गया ऐजुद्दीन खालिद किरमानी ने नक्षत्र–शास्त्र के संस्कृत ग्रन्थ का फारसी अनुवाद दलयाल–ए–फ़िरोजशाही' नाम से किया।[36] संगीत से सम्बन्धित संस्कृत पुस्तक का फारसी अनुवाद अब्दुल अजीज शम्स ने, सालीहोत्र का अनुवाद फारसी में अब्दुल्ला बिन सफी ने किया तथा सिकन्दर लोदी के समय मियाँ भुवा ने चिकित्सा शास्त्र की संस्कृत पुस्तक का फारसी अनुवाद किया, जिसका नाम 'तिब्ब–ए–सिकन्दरी' रखा। चिन्तामणी की भट्ट की रचना 'सुक सप्तति' का फारसी अनुवाद कर शीर्षक 'तुतीनामा' रखा।[37]

मुगलकाल में लगभग सभी बादशाह साहित्य में रूचि लेते थे। सभी ने अपने दरबार में विद्वानों को आश्रय प्रदान किया, जिन्होंने फारसी भाषा का विकास किया। मुगलकाल में महिलाओं को भी फारसी का अच्छा ज्ञान था। गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा ग्रन्थ लिखा। ख्वांदामीर ने क़ानून–ए–हुमायूँनी की रचना की। अकबर के दरबार में अनेक कवि, लेखक, विद्वान इतिहासकार, विद्यमान थे। अबुल–फजल ने आइन–ए–अकबरी में उनसठ श्रेष्ठ कवियों के नामों का उल्लेख किया है।[38]

अकबर ने हिन्दू व मुसलमानों में सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से एक अनुवाद विभाग की स्थापना की। इस विभाग में संस्कृत, तुर्की व अरबी भाषाओं के अनेक ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया। तुजुक–ए–बाबरी का तुर्की से फारसी भाषा में अनुवाद किया।[39] ज्योतिष ग्रन्थ तजक, फैजी द्वारा गणित के संस्कृत ग्रन्थ लीलावती तथा मौलाना शेरी द्वारा इतिहास का संस्कृत ग्रन्थ राजतंरगिणी का फारसी में अनूदित किये गये।[40] बदायूँनी ने 'महाभारत' का फारसी अनुवाद किया और उसका नाम 'रज्मनामा' रखा।[41] अबुल फजल ने संस्कृत ग्रन्थ पंचतन्त्र का फारसी अनुवाद कर उसका शीर्षक 'अनवार–ए–सुहेली' रखा।[42] ताजुल माली ने 'हितोपदेश' का फारसी में अनुवाद कर उसका नाम 'मुफर्री–उल–कुलूब' रखा।[43] बदायूँनी तथा अन्य लेखकों ने मिलकर 'रामायण' का भी फारसी अनुवाद किया।[44] जहाँगीर ने आत्मकथा तुजुक–ए–जहाँगीरी की रचना फारसी भाषा में की जिसे मोतमद खाँ ने किया।[45] फैजी के पश्चात् शाहजहाँ ने मुगल दरबार में अबू तालिब कलीम को राजकवि नियुक्त किया गया। शाहजहाँ के शासनकाल में अनेक फारसी भाषा के कवियों के नाम उल्लेखनीय है, उनमें से चन्द्रभान ब्राह्मण पहला हिन्दू कवि था जिसने अबुल

फजल की शैली को समन्वित कर नई शैली प्रस्तुत की। चन्द्रभान चार चमन के अतिरिक्त गद्य में अनेक रचनाऐं की। इनके अतिरिक्त पादशाहनामा व शाहजहाँनामा ग्रन्थों की रचना हुई।[46] शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह ने बावन उपनिषदों का फारसी अनुवाद 'सिर्रे अकबर' अथवा 'सिर्रे असदार' के नाम से किया। दारा के अन्तर्गत 'भगवतगीता' तथा 'योग वशिष्ठ' का भी फारसी अनुवाद हुआ। दारा के मुंशी बनवालीदास ने 'प्रबोध चन्द्रोदय' का फारसी अनुवाद 'गुल्जार–ए–हाल' नामक शीर्षक के अन्तर्गत किया। इब्न–हर–करन ने 'रामायण' का फारसी अनुवाद किया।[47] औरंगजेब के शासनकाल में हिन्दू व मुसलमान दोनों ने फारसी भाषा में ग्रन्थों की रचना की इस समय फारसी भाषा का प्रचलन बढ़ गया था। खाफ़ी खाँ ने 'मुन्तखब–उल–लुबाव', मोहम्मद काज़िम ने 'आलमगीरनामा', साकी मुस्तैद खाँ ने 'मासिर–ए–आलमगिरी' तथा हिन्दू कवि ईश्वरदास नागर ने फुतूहात–ए–आलमगिरी, भीमसेन कायस्थ ने 'नुस्ख–ए–दिलकुशाँ', सुजान राय भण्डारी ने 'खुलासत–उत–तवारीख' आदि प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई। औरंगजेब ने अपने आदेश व संरक्षण में फ़तवा–ए–आलमगिरी की रचना करवाई।[48] उत्तर मुगल काल में भी फारसी को संरक्षण प्राप्त हुआ किन्तु कालान्तर में उर्दू भाषा का आकर्षण बढ़ गया।

सन्दर्भ–

1 श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 220
2 ताराचन्द, इन्फ्लूएन्स ऑफ इस्लाम ऑन इण्डियन कल्चर, पृ० 137
3 वही, पृ० 74; श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 105
4 श्रीवास्तव, ए०एल०, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 105
5 रामगोपाल, भारतीय मुसलमानों का राजनीतिक इतिहास, पृ० 36–37; श्रीवास्तव, ए०ए०., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 105
6 अहमद, लईक, मध्कालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 74
7 वही
8 हुसैन, युसुफ, ग्लिम्पसेस ऑफ मेडिवल इंडियन कल्चर, पृ० 101
9 श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 11; हुसैन, युसूफ, ग्लिम्पसेस ऑफ मेडिवल इंडियन कल्चर, पृ० 105
10 वही
11 वही, पृ० 98
12 हुसैन, युसूफ, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 108
13 अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 76–81
14 चौबे, झारखण्ड, एवं श्रीवास्तव, कन्हैयालाल, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ० 556–557

[15] वही
[16] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 107
[17] अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 86
[18] चौबे, झारखण्ड, एवं श्रीवास्तव, कन्हैयालाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 563
[19] अहमद, अजीज, स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन द इंडियन एन्वायरमेंट, पृ० 218
[20] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 104
[21] वही, पृ० 109
[22] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 109
[23] उद्धृत अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 66
[24] हुसैन, युसूफ, ग्लिम्पसेस ऑफ मेडिवल इंडियन कल्चर, पृ० 102
[25] वही
[26] वही, पृ० 105
[27] अहमद, लईक, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 70–71
[28] वही, पृ० 71
[29] अहमद, अजीज, स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन द इंडियन एन्वायरमेंट, पृ० 224
[30] हुसैन, युसूफ, ग्लिम्पसेस ऑफ मेडिवल इंडियन कल्चर, पृ० 72
[31] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 92
[32] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 92
[33] तारीख–ए–फरिश्ता, भाग–1, पृ० 254
[34] श्रीवास्तव, ए०एल०, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 95
[35] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 96
[36] रशीद, ए०, सोसायटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल इंडिया, पृ० 171
[37] अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय इतिहास, पृ० 61; दृष्टव्य, रशीद, ए०, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ० 166
[38] आइन–ए–अकबरी, भाग–1, पृ० 618
[39] श्रीवास्तव, ए०एल०, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 100
[40] वही
[41] वही
[42] अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ० 63
[43] वही
[44] चौबे, झारखण्ड एवं श्रीवास्तव, कन्हैयालाल, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ० 545
[45] प्रसाद, बेनी, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ० 418
[46] चतुर्वेदी, हेरम्ब, जहाँआरा, पृ० 241
[47] वही
[48] सरकार, यदुनाथ, हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, पृ० 302